Table of Contents

1. □□□□□ □□□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□
2. □□□□□ □□ □□□ □□ □□□□□□
3. □□□□□ □□ □□□ □□ □□□□□□□□
4. □□□□□ □□ □□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□

□□□□□ □□□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□

□□□□□ □□□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□ □□□ 1907 □□□ □□□ □□□□ □□ □□□□, □□□□□ (□□□□□ □□□□□□) □□□ □□□ □□□ □□ □□ □□□□ □□□□□□□□□□, □□□□□, □□□□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□ □□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□□ "□□□□ □□ □□□", "□□□□□□□", "□□□□□ □□ □□□□□□", "□□□□", "□□□□□-□□□□□□", "□□□□ □□□□" □□□ □□□□□-□□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□□□ □□□□□□□□ □□□□□□□, □□□□□□, □□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□-□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□ □□ □□□□□□□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□□□ □□□□□□□ □□□□□□□□, □□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□□□□□□□□□ □□ □□.□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□ □□□ 1979 □□□ □□□□□□ □□□ □□□□

□□□□□ □□□□□

- □□□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□□□
- □□□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□

- [illegible]
- [illegible]
- [illegible]

[illegible]

"[illegible], [illegible], [illegible], [illegible]"

[illegible]

[illegible]: [illegible]?
[illegible]: [illegible]

[illegible]: [illegible]
[illegible]: [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible]-[illegible], [illegible]

[illegible]: [illegible]-[illegible]?
[illegible]: [illegible], [illegible], [illegible].[illegible]

[illegible]

- [illegible]?
- [illegible]
- [illegible]-[illegible]?

[illegible]

- वे साहित्य को मनुष्य की दृष्टि से देखते थे और ऐसा साहित्य पसंद करते थे जो मनुष्य की आत्मा को तेजोद्दीप्त करे।
- अशोक के फूल , कल्पलता , विचार और वितर्क , कुटज , विचार -प्रवाह, आलोक पर्व आदि।
- साहित्य अकादेमी पुरस्कार , पद्मभूषण , डी .लिट्।

त्वरित संदर्भ

- जन्म : 1907, बलिया , उत्तर प्रदेश।
- प्रमुख रचनाएँ : निबंध , उपन्यास , आलोचना, साहित्य इतिहास।
- पुरस्कार : साहित्य अकादेमी , पद्मभूषण , डी .लिट्।
- मृत्यु : 1979, दिल्ली।

शब्दावली

- वाग्जाल - शब्दों का जाल या साहित्य।
- परमुखापेक्षिता - दूसरों पर निर्भरता।
- तेजोद्दीप्त - तेज से भरा हुआ।
- संवेदनशील - भावुक।

Prepzy

शिरीष के फूल का सारांश

"शिरीष के फूल " हजारी प्रसाद द्विवेदी का एक प्रसिद्ध ललित निबंध है जिसमें वे शिरीष के पेड़ और उसके फूलों के माध्यम से जीवन की कठिनाइयों के बीच धैर्य , अजेय जिजीविषा और लोक के प्रति कर्तव्यशीलता को दर्शाते हैं। निबंध में लेखक ने शिरीष के फूलों की कोमलता और उनके फल की मजबूती के माध्यम से पुरानी और नई पीढ़ी के संघर्ष का प्रतीक प्रस्तुत किया है। यह निबंध गांधीवादी मूल्यों और मानवता के प्रति लेखक की गहरी आस्था को भी प्रतिबिंबित करता है।

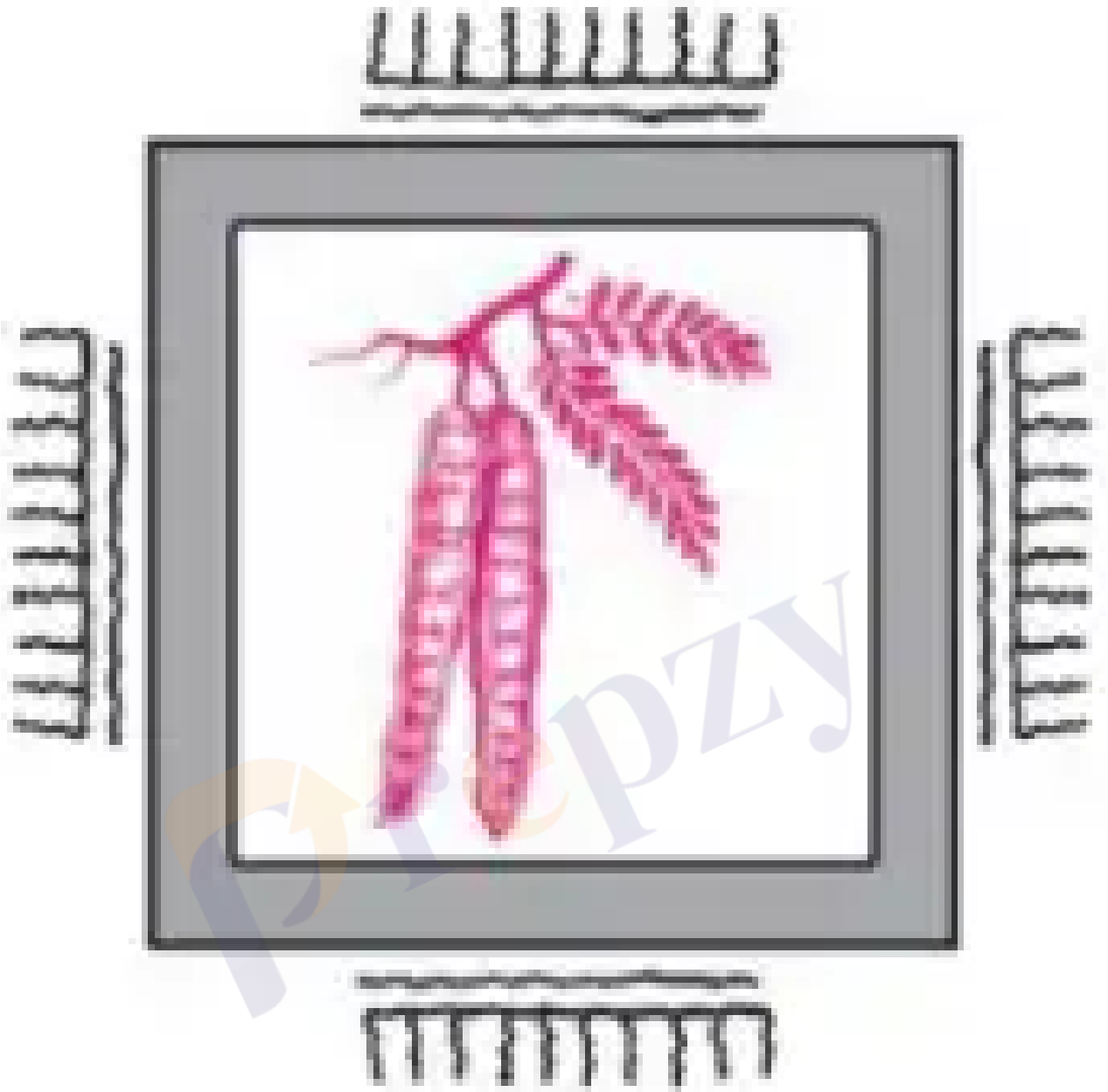

[illegible]

- [illegible]
- [illegible]
- [illegible]
- [illegible]
- [illegible]

[illegible]

"जब उमस से प्राण उबलता रहता है और लू से हृदय सूखता रहता है, एकमात्र शिरीष कालजयी अवधूत की भाँति जीवन की अजेयता का मंत्र प्रचार करता रहता है।"

हल किए गए उदाहरण

प्रश्न : शिरीष के फूल निबंध में शिरीष के पेड़ का क्या महत्व है?
उत्तर : शिरीष का पेड़ धैर्य और जीवन की कठिनाइयों में अजेयता का प्रतीक है।

प्रश्न : लेखक ने शिरीष के फूलों के माध्यम से कौन-से सामाजिक संदेश दिए हैं?
उत्तर : पुरानी और नई पीढ़ी के संघर्ष को दर्शाया गया है और नयी पीढ़ी के स्वागत का साहस दिखाने को कहा गया है।

प्रश्न : निबंध में गांधीवादी मूल्यों का कैसे उल्लेख है?
उत्तर : लेखक ने गांधीजी की याद करते हुए आत्मबल और धैर्य के महत्त्व को बताया है।

अभ्यास प्रश्न

- शिरीष के फूल निबंध में शिरीष के पेड़ का क्या महत्व है?
- लेखक ने शिरीष के फूलों के माध्यम से कौन-से सामाजिक संदेश दिए हैं?
- निबंध में गांधीवादी मूल्यों का कैसे उल्लेख है?

उत्तर कुंजी

- शिरीष का पेड़ धैर्य और जीवन की कठिनाइयों में अजेयता का प्रतीक है।
- पुरानी और नई पीढ़ी के संघर्ष को दर्शाया गया है और नयी पीढ़ी के स्वागत का साहस दिखाने को कहा गया है।
- लेखक ने गांधीजी की याद करते हुए आत्मबल और धैर्य के महत्त्व को बताया है।

त्वरित संदर्भ

- शिरीष का पेड़ जीवन की कठिनाइयों में स्थिरता का प्रतीक।
- फूलों की कोमलता और फल की मजबूती सामाजिक संघर्ष का संकेत।
- गांधीवादी मूल्यों का समावेश।

शब्दावली

- अवधूत - सांसारिक बंधनों से ऊपर उठे संन्यासी।
- फक्कड़ - मस्त और बेपरवाह।
- अनासक्त - विषय -भोग से ऊपर उठना।
- कालजयी - काल के पार रहने वाला।
- लू - गर्म हवा।

शिरीष के फूल का विश्लेषण

यह निबंध शिरीष के पेड़ के माध्यम से जीवन के विभिन्न पहलुओं को दर्शाता है। लेखक ने शिरीष के फूलों की कोमलता और उनके फल की मजबूती के बीच के विरोधाभास को उजागर किया है। शिरीष का पेड़ कठिन मौसम में भी फूलता रहता है, जो जीवन की अजेयता और धैर्य का प्रतीक है। लेखक ने इसे अवधूत की तरह बताया है जो सांसारिक बंधनों से ऊपर है। निबंध में कवि और योगी की अनासक्ति की महत्ता पर भी प्रकाश डाला गया है।

Frenzy

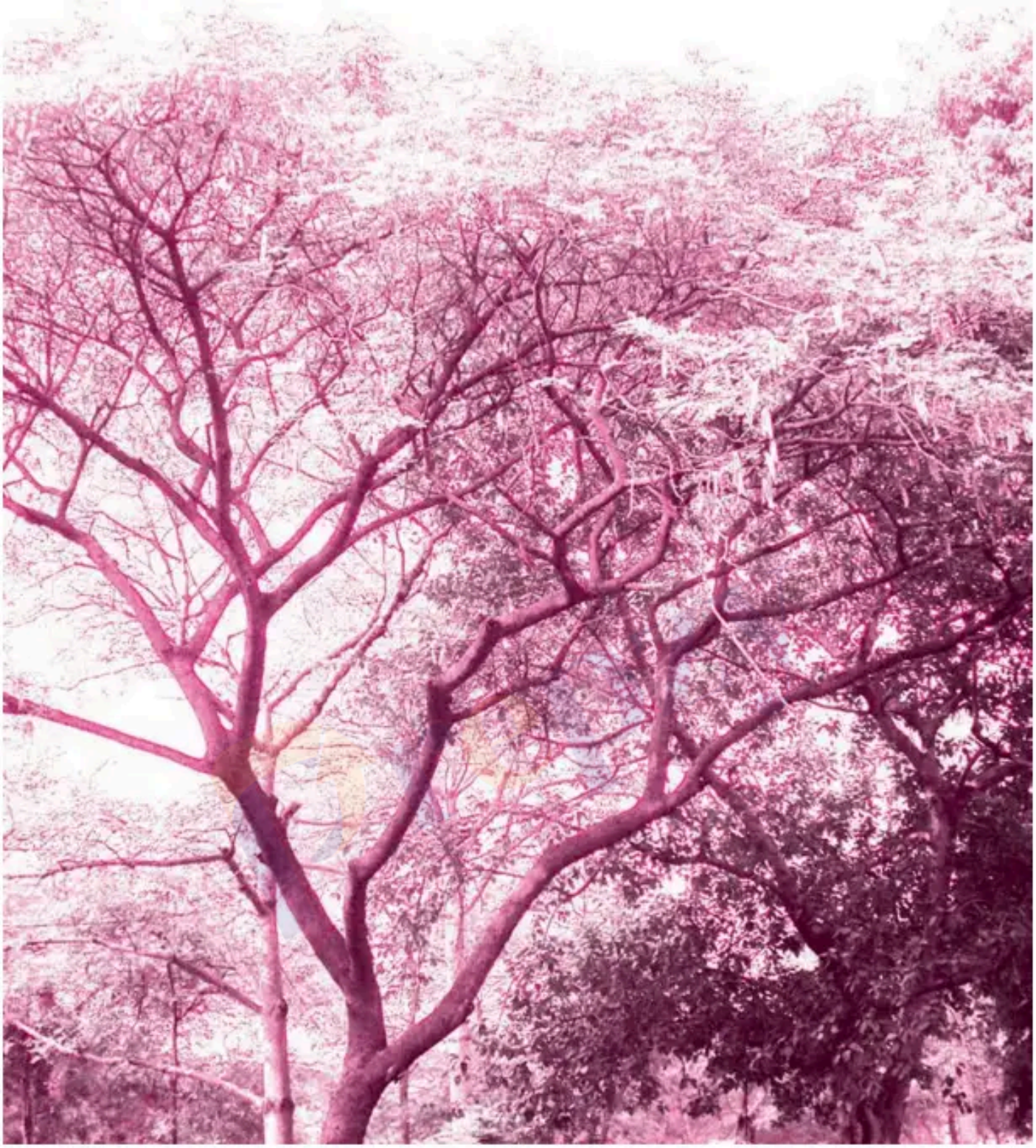

[illegible]

- [illegible]
- [illegible]
- [illegible]
- [illegible]
- [illegible]

पाठ्य प्रमाण

"कवि बनना है मेरे दोस्तो, तो फक्कड़ बनो। शिरीष की मस्ती की ओर देखो।"

हल किए गए उदाहरण

प्रश्न: लेखक ने शिरीष के फूलों की कोमलता और फल की मजबूती के बीच क्या संबंध बताया है?
उत्तर: फूल कोमल होते हैं लेकिन फल इतने मजबूत होते हैं कि नए फल-पत्ते उन्हें बाहर निकालते हैं। यह जीवन के संघर्ष का प्रतीक है।

प्रश्न: निबंध में कवि बनने के लिए क्या गुण आवश्यक बताए गए हैं?
उत्तर: अनासक्ति, फक्कड़पन और स्थिर-प्रज्ञता।

प्रश्न: शिरीष के फूलों के माध्यम से सामाजिक और सांस्कृतिक संघर्ष कैसे दर्शाए गए हैं?
उत्तर: पुरानी और नई पीढ़ी के बीच अधिकार-लिप्सा और संघर्ष को दर्शाया गया है।

Prepzy

अभ्यास प्रश्न

- लेखक ने शिरीष के फूलों की कोमलता और फल की मजबूती के बीच क्या संबंध बताया है?
- निबंध में कवि बनने के लिए क्या गुण आवश्यक बताए गए हैं?
- शिरीष के फूलों के माध्यम से सामाजिक और सांस्कृतिक संघर्ष कैसे दर्शाए गए हैं?

उत्तर कुंजी

- फूल कोमल होते हैं लेकिन फल इतने मजबूत होते हैं कि नए फल-पत्ते उन्हें बाहर निकालते हैं। यह जीवन के संघर्ष का प्रतीक है।
- अनासक्ति, फक्कड़पन और स्थिर-प्रज्ञता।
- पुरानी और नई पीढ़ी के बीच अधिकार-लिप्सा और संघर्ष को दर्शाया गया है।

त्वरित संदर्भ

- शिरीष के फूलों की कोमलता और फल की मजबूती जीवन संघर्ष का प्रतीक।
- कवि बनने के लिए अनासक्ति और फक्कड़पन आवश्यक।
- सामाजिक और सांस्कृतिक संघर्ष का चित्रण।

शब्दावली

- स्थिर-प्रज्ञता - अविचल बुद्धि की अवस्था।
- फक्कड़ - मस्त, बेपरवाह।
- अधिकार-लिप्सा - अधिकार की लालसा।
- मर्मरित - सरसराहट की ध्वनि।

शिरीष के फूल के प्रमुख शब्द और उनके अर्थ

Prepzy

- कर्णिकार - कनेर (या कनियार) नामक फूल।
- आरग्वध - अमलतास नामक फूल।
- खंखड़ - ठूँठ/शुष्क।
- निर्घात - बिना आघात या बाधा के।
- अवधूत - सांसारिक बंधनों व विषय-वासनाओं से ऊपर उठा हुआ संन्यासी।
- लँडूरे - पूँछ विहीन।
- हिल्लोल - लहर।
- अरिष्ठ - रीठा नामक वृक्ष।
- पुन्नाग - एक बड़ा सदाबहार पेड़।
- घनमसण - घना-चिकना (गहरा चिकना/मलायम)।
- परिवेष्टित - ढँका हुआ।
- दोला - झूला।
- बकुल - मौलसिरी का पेड़।
- तुंदिल - तोंद वाला / मोटे पेट वाला।
- मर्मरित - (पत्तों की) खड़खड़ाहट या सरसराहट ध्वनि से युक्त।
- ऊर्ध्वमुखी - प्रगति की दिशा में।
- दुरंत - जिसका विनाश होना मुश्किल है।
- हज़रत - श्रीमान (व्यंग्यात्मक स्वर)।
- अनासक्त - विषय-भोग से ऊपर उठा हुआ।
- अनाविल - स्वच्छ।
- कर्णाट - प्राचीन काल का कर्नाटक राज्य।

- □□□□□□□□□□□□□□ - □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□□
- □□□□□□ - □□□□□ □□□ □□ □□□ □□□□
- □□□□□□□□ - □□□□□□□□
- □□□□□□□□ - □□□□
- □□□□□□ - □□□□□□
- □□□□□□□□ - □□□□□□□□ □□□□□□□ □□□□
- □□□□□□□□□ - □□ (□□□□□) □□ □□□□
- □□□□□□□□ - □□□□□□□□□
- □□□□□ - □□□□□□□□□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□ □□□□□□□ □□□□ □□□ □□□□ '□□□□□-□□□□□' □□□□ □□□□ □□□